शर्तें लागू रहेंगी...!!

मनुष्य के सामने विकल्प हो, तब वो उससे आकर्षित होता है, और ऐसा मानकर चलता है कि उसे अपनी मनपसंद करने की स्वतंत्रता मिल गई है। विकल्प देने वाला बहुत ही चतुर होता है और आकर्षक लगने वाला विकल्प आखिकार व्यक्ति के लिए दुविधा जैसी स्थिति बना देता है।

श्रीकृष्ण बहुत ही चतुर राजनीतिज्ञ थे। दुर्योधन और अर्जुन महाभारत के युद्ध के लिए उनकी मदद मांगने आये, तब उनके समक्ष धर्मसंकट खड़ा हुआ.... परंतु उन्होंने होशियारी पूर्वक कहा कि मैं युद्ध में हथियार धारण नहीं करूंगा। या तो मुझ खाली हाथ वाले को पसंद करे या फिर मेरी अक्षौहिणी सेना को। श्रीकृष्ण दुर्योधन और अर्जुन दोनों का मानस खूब अच्छी तरह समझते थे। अंदर से उन्हें पता था कि दुर्योधन अक्षौहिणी सेना ही मांगेगा, क्योंकि वो मन ही मन गणना करेगा कि अक्षौहिणी सेना में हाथी, घोड़े, रथ के साथ 64 हज़ार योद्धा भी हैं। अक्षौहिणी सेना में 21870 रथ, 21870 हाथी, 109350 भूमि सैनिक और 65168 घोड़े होते हैं। दुर्योधन ललचाया। लेकिन अर्जुन ने श्रीकृष्ण उसके साथ रहें ये विकल्प पसंद किया, क्योंकि उनका मार्गदर्शन ही विजय का राजपथ साबित हो सकता है। ऐसा ही था।

- ब्र. कु. गंगाधर

विकल्प पसंद करते समय मनुष्य की गति और मति आकर्षक सहज और मोहक की ओर जाती है। विकल्प मिले, तब प्रतिस्पर्धी को ऐसा लगता है कि मुझे बहुत खुला मैदान मिल गया है। इसलिए ही विकल्प साधने वाले व्यक्ति को जो कुछ विकल्प पसंद करे, उसका लाभ उसी के पक्ष में रहे। सामने वाला व्यक्ति दुविधा में पड़ जाये और आपको अपने उद्देश्य को साधने का अवसर मिल जाये। यहाँ जर्मनी के शासक बिस्मार्क और तत्कालीन उदार राजनेता और वैज्ञानिक रुडोल्फ का प्रसंग ध्यान में लेने जैसा है। रुडोल्फ स्वभाव से निर्भय थे और बिस्मार्क पर टीका-टिप्पणी बेधड़क करते थे। ऐसी टीका-आलोचना से उत्तेजित हुए बिस्मार्क ने अपना दूत भेजकर वैज्ञानिक, राजचिंतक रुडोल्फ को द्वंद्व युद्ध के लिए चुनौति दी।

रुडोल्फ ऐसे तो हार मानने वाला नहीं था। उसके पास चातुर्य और सूझ दोनों थे। उसने बिस्मार्क को वापिस संदेश भेजा कि आपने द्वंद्वयुद्ध के लिए मुझे चुनौती दी है, इसलिए लड़ने के लिए शस्त्र हथियार की पसंदगी मैं करूंगा, और उसे पसंद करने की मुझे स्वतंत्रता होगी।

बिस्मार्क ने रुडोल्फ की बात मान ली। चुनौती के जवाब में रुडोल्फ ने दो ब्रेड तैयार कराई और बिस्मार्क को कहा, बाहर से ये दोनों ब्रेड रूप रंग और आकार में एक जैसे ही हैं, लेकिन दोनों में से एक ब्रेड विनाशक विशैली है, जबकि दूसरी ब्रेड शुद्ध है। मान्यवर अब निर्णय आपको करना है कि आप कौन सा ब्रेड पसंद करेंगे। जो सैंडविच आप खाये बिना छोड़ देंगे उसका उपयोग मैं करूंगा।

रुडोल्फ अपनी चाल में सफल रहा और सम्राट बिस्मार्क ने रुडोल्फ को संदेश भेजा कि उन्होंने रुडोल्फ के साथ द्वंद्व युद्ध नहीं करने का निर्णय लिया है।

रॉबर्ट ने शक्ति के 48 नियमों को संपादित किया है, स्पर्धा में जीतना मुश्किल नहीं, कठिन तो यह है कि विपरीत या प्रतिकूल संजोग में आत्मविश्वास पर अडिग रहना, योग्य समय में योग्य निर्णय लेने की दृढ़ता रखना। ज़िन्दगी में हम दूसरों को विकल्प के रूप में देते हैं, ऐसा मानकर चलते हैं बाज़ी हमारे हाथ में है। संकल्प करने के बजाय अपने पक्ष में फायदा हो, ऐसा विकल्प पसंद करते हैं। विकल्प, ये बिना विचार किये कूद जाने का क्षेत्र नहीं, बल्कि दृढ़तापूर्वक प्रतिस्पर्धी को हमारे द्वारा दिये हुए विकल्प द्वारा पराजित करने का विषय है। विकल्प देने के बाद स्वयं ही अफसोस व्यक्त करें कि विकल्प देने में मैं धोखा खा गया; तो आपके जैसा महामूर्ख दूसरा कोई नहीं।

परीक्षा हो या नौकरी, मकान खरीदने का निर्णय हो या लगन के सम्बन्ध में निर्णय, विकल्पों का चारो ओर से गहन विचार कर निर्णय लेना चाहिए। बहुत सारी धंधे की बातों में उदार और मोहक आकर्षण बड़े अक्षरों में छाप कर ग्राहकों को आकर्षित करने में आता है, और नीचे छोटे अक्षरों मे लिखा रहता है कि ये शर्तें लागू रहेंगी। ज़्यादातर लोग बाह्य आकर्षणों से, वर्णन से लोभित हो जाते हैं। लेकिन शर्तें लागू रहेंगी, ये लिखत पढ़ना छोड़ देते हैं। परिणाम स्वरूप विवाद खड़ा हो जाता है। ''शर्तें लागू रहेंगी'' वाली छटकने की खिड़की की ऑफर देने वाले उपयोग कर कानूनी बाज़ी अपने पक्ष में लाने की कोशिश में ज़्यादातर कामयाब हो जाते हैं।

बहुत से वकील साक्ष्य देने वालों को मैं जो कहूँ उसका उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दो और उस समय विवादास्पद मुद्दा विषयक विकल्प इस तरह से इज़ात करते हैं कि साक्ष्य देने वाला 'हाँ' या 'ना' का विकल्प पसंद करने में उलझ जाता है।

जो टेन्शन फ्री हैं, बाबा उसके सामने हाज़िर हैं

ओम् शान्ति की पढ़ाई बहुत अच्छी है। जब बाबा के नयनों में हम हैं या हमारे नयनों में बाबा है तो क्या होता है? अपने आप याद आता है। यह है सच्चे दिल वाले का पुरुषार्थ कि मैं तुम्हें देखता रहूँ... मुख से न भी कहें तो भी ऑटोमेटिक अपने आप बाबा सामने आ जाता है या हम बाबा के पास पहुँच जाते हैं। दोनों तरफ की खींच है तो सब सहज हो जाता है। तो बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा, कितना भोला शिव भगवान है। भोला है पर हमारा भाग्य बनाने में होशियार है। एक मिनट भी और कोई ख्याल में न जावें और कोई चिंतन में न रहें। एक बाबा दूसरा न कोई, बस यह एक भावना हो। 108 की माला में आने के लिये भी कण्डीशन है। तो सदा ही ऐसे रहो किसी के काम आओ। अभी इसमें अभिमान आया तो सारी कमाई चट करेंगे। संगमयुग पर यह पुरुषार्थी जीवन जो है इसमें कोई मेहनत नहीं है। कभी भी कुछ भी हो जाये, थोड़ा भी चेहरे पर उदासी न आये। एक बारी हंसी में बाबा ने कहा जो उदासी में आयेंगे वो दासी बन जायेंगे। जिस घड़ी थोड़ा उदास शक्ल हो तो बाबा के ऐसे शब्द याद करो। कम से कम यहाँ बैठे तो ध्यान रखो कि बाबा तुम्हें मैं देखता रहूँ... तो खुश रहेंगे। बाबा भी कहते बच्चे तुम्हारी ऐसी स्थिति हो जो कैसी भी परिस्थिति चली जाये, तब तो हमारी स्व-स्थिति से सारे विश्व की सेवा बाबा करा सकता है।

भक्तिमार्ग में भगवान को पुकारते थे और अभी वो खुद ही आता है हमें मिलने या फिर हमें ही अपने पास बुला लेता है। तो इस संगमयुग की महिमा बहुत बड़ी है। अपने दिल पर हाथ रखकर देखो कि दिल में दिलाराम बैठा है ना! तो श्रीमत को सिर माथे पर रख करके अपने को ऐसा मज़बूत बनाना है, तो जो भी सीन सामने आवे वो चली जाये, क्योंकि मैं तो बाबा के साथ हूँ ना। रचता और रचना का ज्ञान बहुत अच्छा कीमती है। कोई यहाँ हाज़िर है, कोई वहाँ अपने स्थानों पर है, पर बुद्धियोग यहाँ लटका हुआ है। कोई ऐसे भी होंगे, बैठे यहाँ हैं, पर बुद्धि बाहर है। अभी सच्ची दिल से कोई बतायेगा? दूसरा - आपस में एक दो के लिये भी हमारी शुद्ध भावना होनी चाहिए क्योंकि संगठन की शक्ति बहुत अच्छा उड़ने में मदद करती है।

मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? बाबा चला जाये और हम यहाँ रह जायें। जैसे साकार में बाबा ने भासना दी, उससे भी ज़्यादा अव्यक्त हो करके दे रहा है। अभी भी अगर सब 3 मिनट साइलेंस में रहेंगे तो बाबा हाज़िर हो जायेगा। बाबा बहुत अच्छा है, सिर्फ हमको टेन्शन फ्री रहना है, जो टेन्शन फ्री हैं, बाबा उसके सामने हाज़िर है। कोई बात का फिकर नहीं हो, क्योंकि फिकर से फारिग करने वाला सद्गुरू सामने है ना, और वो ऐसी श्रीमत देता है जो सिरमाथे पर रखने से दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल हो जाता है। इससे एक तो बाबा की डायरेक्ट ताकत मिलती है, दूसरा नॉलेज बड़ी सहज रीति से दिमाग में ऐसी फिट हो जाती है जो यह क्यों हुआ? क्या हुआ? कैसे होगा? इस तरह के संकल्प ही नहीं आते क्योंकि यह काँ काँ करने वाले कौवे का काम है, कौवे काले होते हैं ना। हम क्या हैं, कैसे हैं, जैसे हैं वैसे हैं, बाबा अपना बना करके अपने जैसा बना रहा है। इतना अच्छा बाबा है जो सिखाता है कि आपका एक एक संकल्प भी कैसा हो। यहाँ इस दुनिया से कोई लगाव झुकाव न हो। यह लगाव झुकाव स्वमान में रहने नहीं देता है। स्वमान में रहना हो और सभी को ऐसी दृष्टि से मिलना हो तो बाबा देखता है बच्चों का आपस में कितना सच्चाई और प्रेम है। वायुमण्डल में सच्चाई प्रेम बाबा को अपना बनाने में मदद करता है।

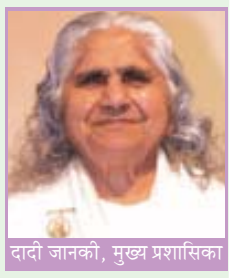

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

'खुशनसीब वह' जो सदा खुश रहते और खुशियां बांटते

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओ नहीं, बातें तो होंगी, लेकिन बातें खुशी न ले जाएं। खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। चेक करो शुरू से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिज़ी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखायी दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया।

जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। भगवान के साथ रहने वालों का गायन है। बाबा सवेरे-सवेरे उठाता है। हरेक के दिल से निकलता है मेरा बाबा। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी की है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूँगा। संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। भले कामकाज करते हैं लेकिन नशा क्या रहता है भगवान मेरा हो गया। स्वप्न में भी नहीं था कि इतने बड़े बाबा के साथ जाकर रहेंगे। लोग भगवान के लिए क्या-क्या करते हैं लेकिन वह हमारा हो गया। बाबा मेरा है, ऐसे नहीं बहनों का ज़्यादा है पहले मेरा है। अरे, जिसको इतना समय याद करते थे वह हमारा हो गया कितनी खुशी की बात है।

अनुभव भी होता है वह मेरा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है। हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। जिसे दुनिया पुकार रही है वह हमारा हो गया। हमारे दिल से क्या निकलता है - मेरा बाबा। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। बाबा कौन है? बाबा कहने से सब सामने आ जाता है। ऐसे कभी समझा था कि भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे यह कम थोड़ेही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। जब हम छोटे थे तो इतना नशा था जो कहते थे जो हमारी शक्ल देखेगा खुश हो जायेगा। क्योंकि हम भगवान के घर में रहते हैं। वह हमारा बाप है। बातें तो संगठन में आयेंगी, क्योंकि संगठन में हम भी रहे हैं। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है, रिवाजी थोड़े हैं। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। दुनिया में क्या लगा पड़ा है और हम मज़े में रहते हैं। बाबा हमारे साथ है। सवेरे भगवान से गुडमार्निंग करते हैं यह अपना भाग्य देख खुशी होती है। दुनिया में कितने कुमार हैं लेकिन बाबा ने हमें अपने घर में रहने का चांस दिया है। थोड़ी खिटपिट तो होती है यह भी पेपर है जिसमें पास होना है। पास होकर कहाँ जायेंगे? ब्रह्माबाबा के साथ सतयुग में। कहाँ थे कहाँ पहुँच गये, इस अपने भाग्य की स्मृति रहती है? हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। हमको बाबा ने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनाया है, बस यही गायन करते रहो। हमारे पर बाबा की नज़र गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ, बाबा मेरे साथ है यह स्मृति में रखो। भगवान के घर में आये हैं, अगर यहाँ खुशी नहीं मिलेगी तो कहाँ मिलेगी! बाबा की पालना में पल रहे हो यह भाग्य कम नहीं। आपके भाग्य को देख और भी खुश होते हैं। दुनिया भगवान के लिए तड़फती है और आप उसके साथ रहते हो। ड्रामा ने और बाबा ने मंजूर किया है जो आपको यहाँ रहने का भाग्य मिला। भागवत पढ़कर आँखों में आँसू आते हैं वह आपका ही यादगार है जो भगवान के साथ रहते हो। सब बातें खत्म कर दिल में दिलाराम को बिठा लो। खुशी कभी नहीं गंवाना।